❋ 15 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बच्चों को आत्मा का परिचय भी दिया है। आत्मा भ्रकुटी के बीच में निवास करती है। बाबा ने समझाया है आत्मा अविनाशी है, इनका तख्त यह विनाशी शरीर है। यह बातें तुम जानते हो कि हम सब आत्मायें आपस में भाई-भाई एक बाप के बच्चे हैं। ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह भूल है। तुम अच्छी रीति समझाते हो, हर एक में 5 विकारों की प्रवेशता है तो कई समझते हैं यह ठीक बोलते हैं।

2] बच्चे, तुम बाप की भी नहीं मानेंगे ! अज्ञान काल में भी बाप की समझानी और भाई की समझानी में फर्क पड़ता है। भाई का इतना असर नहीं पड़ेगा जितना बाप का असर पड़ेगा। बाप फिर भी बड़ा हुआ ना, तो डर रहेगा। तुमको भी बाप समझाते हैं– मुझ अपने बाप को याद करो। तुमको शर्म नहीं आती तुम घड़ी-घड़ी मुझे भूल जाते हो।

3] बाप समझाते हैं ड्रामा अनुसार रावण के संग में यह हुआ है। अब भक्ति मार्ग सब पूरा हुआ, पास्ट हो गया, बीच में कोई रोकने वाला तो होता नहीं। दिन-प्रतिदिन उतरते-उतरते तमोप्रधान बुद्धि बुद्धू हो जाते हैं। जिसकी पूजा करते हैं, उनको ठिक्कर-भित्तर में कह देते हैं। इसको कहा जाता है **बेहद की बेसमझी।** बेहद के बच्चों की बेहद की बेसमझी। एक तरफ शिवबाबा की पूजा करते हैं, दूसरे तरफ उस बाप को ही सर्वव्यापी कहते हैं। अभी तुमको स्मृति आई है इतनी बेसमझी की जो बाप की ग्लानि कर दी है। अब तुम बच्चों ने समझा है तो अब पुरूषार्थ कर रहे हो बेगर टू प्रिन्स बनने का। श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिन्स, उनके के लिए फिर कहते 16108 रानियाँ थी, बच्चे थे ! अभी तुमको तो लज्जा आयेगी। कोई पाप करते हैं तो भगवान के आगे कान पकड़कर कहते हैं– हे भगवान, बड़ी भूल हुई, रहम करो, क्षमा करो। तुमने कितनी बड़ी भूल की है। बाप समझाते हैं– ड्रामा में ऐसा है। जब ऐसे बनो तब तो मैं आऊं।

4] हम जब पहले-पहले घर से आये तो पतित थे क्या? देह-अभिमानी बनने के कारण पतित बने।

5] सब धर्म वालों को मुक्तिधाम घर में जाना है। वहाँ पवित्र हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है, जो बाप आकर समझाते हैं। यह ज्ञान सब धर्मों के लिए है। बाबा के पास समाचार आया था, किसी आचार्य ने कहा आप सबको आत्मा कें परमात्मा समझ नमस्कार करता हूँ। अब इतने सब परमात्मा हैं क्या? कुछ भी समझ नहीं।

6] स्वतन्त्रता उसको कहा जाता है- जब हम पवित्र देवता बनते हैं तो रावण राज्य से छूट जाते हैं। सच्ची स्वतन्त्रता बाप ही आकर देते हैं। अभी तो पराये राज्य में सब दुःखी हैं। स्वतन्त्रता मिलने का यह पुरूषोत्तम संगमयुग है। वह तो कहते फॉरेन गवर्मेन्ट गई तो हम स्वतन्त्र बनें। अब तुम जानते हो जब तक पावन नहीं बने हैं तब तक स्वतन्त्र नहीं कहेंगे। फिर जमघटों की सजायें खानी पड़ेगी। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बाप आते हैं घर ले जाने। वहाँ सब स्वतन्त्र होते हैं।

7] बेहद के बाप को भी कहते हैं– बाबा, हमको लिबरेट करो। आप चलो, हम भी आपके पीछे चलेंगे। सिवाए बाप के और कोई रास्ता नहीं बताते हैं। कितने शास्त्र पढ़ते थे, तीर्थों पर धक्के खाते थे परन्तु भगवान को नहीं जानते तो ढूंढेंगे फिर कहाँ से। सर्वव्यापी है फिर मिलेंगे कैसे। कितना अज्ञान अन्धियारे में हैं। सर्व का सद्गति दाता एक बाप है, वही आकर तुम बच्चों को अज्ञान अन्धेरे से निकालते हैं।

❋ योग-

1] तुम कहते हो बेहद के बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों।

2] बच्चे, तुम्हें लज्जा नहीं आती ! बाप को याद नहीं करते हो ! बाप के साथ तुम्हारा प्यार नहीं हैं ! कितना याद करते हो? बाबा एक घण्टा। अरे, **निरन्तर याद करेंगे तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे।** जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है।

...2

❋ 15 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ धारणा-

1] बाप आकर क्या करते हैं? कहते हैं पावन बनना है। बाप की श्रीमत है अपने को आत्मा निश्चय करो।

2] बेहद का बाप कहते हैं यह जन्म निर्विकारी बनो तो 21 जन्म निर्विकारी बन पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। यह नहीं मानते हो। बाप के कहने का तीर कड़ा लगता है। फर्क तो रहता है।

3] तुम ही पूरा याद नहीं कर सकते हो तो तुम्हारा तीर कैसे लगेगा इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट रखो। मुख्य बात है ही पावन बनने की। जितना पावन बनेंगे उतना नॉलेज धारण होगी। खुशी भी होगी। बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए– हम सबका उद्धार करें।

4] जैसे प्रकृति की लाइट साइन्स के अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है, ऐसे आप अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति की लाइट द्वारा ज्ञान योग की शक्तियों का प्रयोग करो। यदि स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज होती है। जब हर एक स्वयं के प्रति प्रयोग में लग जायेंगे तो प्रयोगशाली आत्माओं का पावरफुल संगठन बन जायेगा।

❋ सेवा-

1] अब बाप कहते हैं– तुमको सब धर्म वालों का कल्याण करना है।

2] कोई भी धर्म वाला आये, उनसे पूछना है परमपिता परमात्मा का तुमको परिचय है, वह कौन है? कहाँ निवास करते हैं? तो कहेंगे ऊपर में या कहेंगे सर्वव्यापी है।

3] जिन्होंने भक्ति जास्ती नहीं की है, वह ठहरते नहीं हैं। सेन्टर्स में भी कोई कितना समय, कोई कितना समय ठहरते हैं। इससे समझना चाहिए कि भक्ति कम की है इसलिए ठहरते नहीं हैं। फिर भी जायेंगे कहाँ। दूसरी कोई हट्टी तो है नहीं। ऐसी क्या युक्ति रचें जो मनुष्य जल्दी समझ लें। अभी तो सबको पैगाम देना है। यह कहना है कि बाप को याद करो।

4] बाप कहते हैं विलायत में भी जाकर तुमको यह समझाना है। सभी धर्म वालों पर तुमको तरस पड़ता है। सभी कहते हैं– हे भगवान रहम करो, ब्लिस करो, दु:ख से लिबरेट करो। परन्तु समझते कुछ नहीं। बाप अनेक प्रकार की युक्तियाँ बतलाते हैं। सबको यह बतलाना है कि तुम रावण की जेल में पड़े हो। कहते है स्वतन्त्रता मिले, परन्तु वास्तव में स्वतन्त्रता कहा किसको कहा जाता है, यह कोई जानता नहीं है। रावण की जेल में तो सब फँसे हुए हैं। अभी सच्ची स्वतन्त्रता देने के लिए बाप आये हैं। फिर भी रावण की जेल में परतन्त्र होकर पाप करते रहते हैं। सच्ची स्वतन्त्रता कौन-सी है? यह मनुष्यों को बतलाना है। तुम अखबार में भी डाल सकते हो– यहाँ रावण के राज्य में स्वतन्त्रता थोड़ेही है। बहुत शार्ट में लिखना चाहिए। जास्ती तीक-तीक कोई समझ न सके। बोलो, तुमको स्वतन्त्रता है कहाँ, तुम तो रावण की जेल में पड़े हो। तुम्हारा विलायत में आवाज़ होगा तो फिर यहाँ झट समझ जायेंगे। एक-दो पर घेराव करते रहते हैं। तो यह स्वतन्त्रता हुई क्या? स्वतन्त्रता तो तुमको बाप दे रहे हैं। रावण की जेल से स्वतन्त्र कर रहे हैं। तुम जानते हो वहाँ हम बड़े स्वतन्त्र, बड़े धनवान होते हैं। किसकी नज़र भी नहीं पड़ती। पीछे जब कमजोर बनें तब सबकी नज़र पड़ी तुम्हारे धन पर। मुहम्मद गज़नवी ने आकर मन्दिर को लूटा तो तुम्हारी स्वतन्त्रता पूरी हो गई। रावण के राज्य में परतन्त्र बन गये। अभी तुम पुरूषोत्तम संगमयुग पर हो। अभी सच्ची स्वतन्त्रता को पा रहे हो। वह तो स्वतन्त्रता को समझते ही नहीं। तो यह बात भी युक्ति से समझानी है। जिन्होंने कल्प पहले स्वतन्त्रता पाई है, वही मानेंगे। तुम समझाते हो तो कितना आरग्यु करते हैं, जैसे बुद्धू। टाइम वेस्ट करते हैं तो दिल नहीं होती है बात करें।

5] तुम सब धर्म वालों को समझा सकते हो– तुम आत्मा हो, मुक्तिधाम से आये हो पार्ट बजाने। सुखधाम से फिर दु:खधाम में तमोप्रधान दुनिया में आ गये हो।

6] तुम सब धर्म वालों की सर्विस करने वाले हो। विलायत वालों को भी समझाना है– तुम सब भाई-भाई हो ना। सब शान्तिधाम में रहते हैं। अब रावण राज्य में हो। अब घर जाने का रास्ता आपको बताते हैं, अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। कहते भी हैं भगवान सबको लिबरेट करते हैं। परन्तु यह नहीं सबझते कि कैसे लिबरेट करते हैं।